रविवार 27 जून, 2021

***विषय* — क्रिश्चियन साइंस**

***स्वर्ण पाठ:* यिर्मयाह 8 : 22**

"क्या गिलाद देश में कुछ बलसान की औषधि नहीं? क्या उस में कोई वैद्य नहीं? यदि है, तो मेरे लोगों के घाव क्यों चंगे नहीं हुए?"

उत्तरदायी अध्ययन: यिर्मयाह **30 : 12, 13, 17**
प्रकाशित वाक्य **7: 16, 17**
प्रकाशित वाक्य **22: 1, 2**

12 यहोवा यों कहता है: तेरे दु:ख की कोई औषध नहीं, और तेरी चोट गहिरी और दुखप्रद है।
13 तेरा मुक़द्दमा लड़ने के लिये कोई नहीं, तेरा घाव बान्धने के लिये न पट्टी, न मलहम है।
17 मैं तेरा इलाज कर के तेरे घावों को चंगा करूंगा, यहोवा की यह वाणी है।
16 वे फिर भूखे और प्यासे न होंगे: ओर न उन पर धूप, न कोई तपन पड़ेगी।
17 क्योंकि मेम्ना जो सिंहासन के बीच में है, उन की रखवाली करेगा; और उन्हें जीवन रूपी जल के सोतों के पास ले जाया करेगा, और परमेश्वर उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा॥
1 फिर उस ने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेंम्ने के सिंहासन से निकल कर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी।
2 और नदी के इस पार; और उस पार, जीवन का पेड़ था: उस में बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस पेड़ के पत्तों से जाति जाति के लोग चंगे होते थे।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. निर्गमन 15 : 26 (मैं हूँ)

26 मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा हूं॥

2. यिर्मयाह 17 : 5-10, 12-14

5 यहोवा यों कहता है, श्रापित है वह पुरुष जो मनुष्य पर भरोसा रखता है, और उसका सहारा लेता है, जिसका मन यहोवा से भटक जाता है।
6 वह निर्जल देश के अधमूए पेड़ के समान होगा और कभी भलाई न देखेगा। वह निर्जल और निर्जन तथा लोनछाई भूमि पर बसेगा।
7 धन्य है वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिसने परमेश्वर को अपना आधार माना हो।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

8 वह उस वृक्ष के समान होगा जो नदी के तीर पर लगा हो और उसकी जड़ जल के पास फैली हो; जब घाम होगा तब उसको न लगेगा, उसके पत्ते हरे रहेंगे, और सूखे वर्ष में भी उनके विषय में कुछ चिन्ता न होगी, क्योंकि वह तब भी फलता रहेगा।
9 मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है?
10 मैं यहोवा मन की खोजता और हृदय को जांचता हूँ ताकि प्रत्येक जन को उसकी चाल-चलन के अनुसार अर्थात उसके कामों का फल दूं।
12 हमारा पवित्र आराधनालय आदि से ऊंचे स्थान पर रखे हुए एक तेजोमय सिंहासन के समान है।
13 हे यहोवा, हे इस्राएल के आधार, जितने तुझे छोड देते हैं वे सब लज्जित होंगे; जो तुझ से भटक जाते हैं उनके नाम भूमि ही पर लिखे जाएंगे, क्योंकि उन्होंने बहते जल के सोते यहोवा को त्याग दिया है।
14 हे यहोवा मुझे चंगा कर, तब मैं चंगा हो जाऊंगा; मुझे बचा, तब मैं बच जाऊंगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।

3. 2 इतिहास 7 : 14

14 तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन हो कर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी हो कर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुन कर उनका पाप क्षमा करूंगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा।

4. यशायाह 9 : 2, 6, 7

2 जो लोग अन्धियारे में चल रहे थे उन्होंने बड़ा उजियाला देखा; और जो लोग घोर अन्धकार से भरे हुए मृत्यु के देश में रहते थे, उन पर ज्योति चमकी।
6 क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत, युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।
7 उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिये वे उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से ले कर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए ओर संभाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा॥

5. मरकुस 1 : 1, 14, 15, 21-26, 29-32, 34 (*से 1st* ,)

1 परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ।
14 यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया।
15 और कहा, समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो॥
21 और वे कफरनहूम में आए, और वह तुरन्त सब्त के दिन सभा के घर में जाकर उपदेश करने लगा।
22 और लोग उसके उपदेश से चकित हुए; क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों की नाईं नहीं, परन्तु अधिकारी की नाई उपदेश देता था।
23 और उसी समय, उन की सभा के घर में एक मनुष्य था, जिस में एक अशुद्ध आत्मा थी।
24 उस ने चिल्लाकर कहा, हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम?क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं तुझे जानता हूं, तू कौन है? परमेश्वर का पवित्र जन!
25 यीशु ने उसे डांटकर कहा, चुप रह; और उस में से निकल जा।

26 तब अशुद्ध आत्मा उस को मरोड़कर, और बड़े शब्द से चिल्लाकर उस में से निकल गई।
29 और वह तुरन्त आराधनालय में से निकलकर, याकूब और यूहन्ना के साथ शमौन और अन्द्रियास के घर आया।
30 और शमौन की सास ज्वर से पीडित थी, और उन्होंने तुरन्त उसके विषय में उस से कहा।
31 तब उस ने पास जाकर उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया; और उसका ज्वर उस पर से उतर गया, और वह उन की सेवा-टहल करने लगी॥
32 सन्ध्या के समय जब सूर्य डूब गया तो लोग सब बीमारों को और उन्हें जिन में दुष्टात्माएं थीं उसके पास लाए।
34 और उस ने बहुतों को जो नाना प्रकार की बीमारियों से दुखी थे, चंगा किया॥

6. मरकुस 5 : 25-34

25 और एक स्त्री, जिस को बारह वर्ष से लोहू बहने का रोग था।
26 जिस ने बहुत वैद्यों से बड़ा दुख उठाया और अपना सब माल व्यय करने पर भी कुछ लाभ न उठाया था, परन्तु और भी रोगी हो गई थी।
27 यीशु की चर्चा सुनकर, भीड़ में उसके पीछे से आई, और उसके वस्त्र को छू लिया।
28 क्योंकि वह कहती थी, यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंगी, तो चंगी हो जाऊंगी।
29 और तुरन्त उसका लोहू बहना बन्द हो गया; और उस ने अपनी देह में जान लिया, कि मैं उस बीमारी से अच्छी हो गई।
30 यीशु ने तुरन्त अपने में जान लिया, कि मुझ में से सामर्थ निकली है, और भीड़ में पीछे फिरकर पूछा; मेरा वस्त्र किस ने छूआ?
31 उसके चेलों ने उस से कहा; तू देखता है, कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है, और तू कहता है; कि किस ने मुझे छुआ?
32 तब उस ने उसे देखने के लिये जिस ने यह काम किया था, चारों ओर दृष्टि की।
33 तब वह स्त्री यह जानकर, कि मेरी कैसी भलाई हुई है, डरती और कांपती हुई आई, और उसके पांवों पर गिरकर, उस से सब हाल सच सच कह दिया।
34 उस ने उस से कहा; पुत्री तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है: कुशल से जा, और अपनी इस बीमारी से बची रह॥

7. यूहन्ना 14 : 12

12 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।

8. याकूब 5 : 13 (*से 1st* .), 14, 15

13 यदि तुम में कोई दुखी हो तो वह प्रार्थना करे।
14 यदि तुम में कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उसके लिये प्रार्थना करें।
15 और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उस को उठा कर खड़ा करेगा; और यदि उस ने पाप भी किए हों, तो उन की भी क्षमा हो जाएगी।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 129 : 21-26

हमें औषध विज्ञान का परित्याग करना चाहिए, और ऑन्कोलॉजी को अपनाना चाहिए, - "वास्तविक होने का विज्ञान।" हमें केवल बाहरी अर्थों को स्वीकार करने के बजाय यथार्थवाद में गहराई से देखना चाहिए। क्या हम चीड़ के पेड़ से आड़ू इकट्ठा कर सकते हैं, या कलह से होने की सहमति सीख सकते हैं?

2. 411 : 20-23

सभी बीमारी का कारण और आधार भय, अज्ञानता या पाप है। रोग हमेशा एक झूठी भावना से प्रेरित होता है जो मानसिक रूप से मनोरंजन करता है, नष्ट नहीं होता है। रोग एक विचार की बाहरी छवि है।

3. 180 : 17-24

डॉक्टरों को अपने रोगियों के विचारों में बीमारी नहीं डालनी चाहिए, जैसा कि वे अक्सर करते हैं, बीमारी को एक निश्चित तथ्य घोषित करके, इससे पहले कि वे भौतिक विश्वास के माध्यम से बीमारी को मिटाने के लिए काम पर जाएं, जो वे प्रेरित करते हैं। उन्हें भय के साथ विचार प्रस्तुत करने के बजाय, भय को दूर करने वाले दिव्य प्रेम के प्रभाव से नश्वर मन के इस अशांत तत्व को ठीक करने का प्रयास करना चाहिए।

4. 416 : 24-2

बीमारों को उस मानसिक प्रक्रिया के बारे में कुछ भी नहीं पता है जिसके द्वारा वे समाप्त हो जाते हैं, और इसके अलावा आध्यात्मिक विधि के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं जिससे उन्हें ठीक किया जा सके। अगर वे अपनी बीमारी के बारे में पूछते हैं, तो उन्हें वही बताएं जो उनके लिए सबसे अच्छा हो। उन्हें आश्वस्त करें कि वे अपनी बीमारियों के बारे में बहुत अधिक सोचते हैं, और उस विषय पर पहले ही बहुत कुछ सुन चुके हैं। उनके विचारों को उनके शरीर से हटाकर उच्च वस्तुओं की ओर मोड़ें। उन्हें सिखाएं कि उनका अस्तित्व आत्मा द्वारा बनाए रखा जाता है, न कि पदार्थ से, और यह कि वे ईश्वर, दिव्य प्रेम में स्वास्थ्य, शांति और सद्भाव पाते हैं।

5. 153 : 16-24

तुम कहते हो एक फोड़ा दर्दनाक है; परन्तु यह असम्भव है, क्योंकि मन के बिना पदार्थ दुखदायी नहीं होता। फोड़ा बस सूजन और सूजन के माध्यम से, दर्द में विश्वास प्रकट होता है, और इस विश्वास को फोड़ा कहा जाता है। अब मानसिक रूप से अपने रोगी को सच्चाई का उच्च क्षीणन दें, और यह जल्द ही फोड़ा को ठीक कर देगा। तथ्य यह है कि दर्द मौजूद नहीं हो सकता जहां महसूस करने के लिए कोई नश्वर मन नहीं है, यह इस बात का प्रमाण है कि यह तथाकथित मन अपना दर्द खुद बनाता है - यानी दर्द में अपना विश्वास।

6. 417 : 20-26

क्रिश्चियन साइंस हीलर के लिए, बीमारी एक सपना है जिसमें से रोगी को जागृत करने की आवश्यकता होती है। रोग चिकित्सक को वास्तविक नहीं दिखना चाहिए, क्योंकि यह प्रदर्शन है कि रोगी को ठीक करने का तरीका उसके लिए बीमारी को असत्य बनाना है। ऐसा करने के लिए, चिकित्सक को विज्ञान में रोग की असत्यता को समझना चाहिए।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

7. 370 : 23-2

चिकित्सा साक्ष्य और व्यक्तिगत अनुभव दोनों के अनुसार, एक दवा अंततः अपनी अपेक्षित शक्ति खो सकती है और रोगी के लिए और अधिक नहीं कर सकती है। स्वच्छ उपचार भी अपनी प्रभावशीलता खो देता है। इसी तरह नीमहकीम बीमारों की विश्वसनीयता को प्रेरित करने में विफल रहता है, और फिर वे सुधार करना बंद कर देते हैं। ये सबक उपयोगी हैं। उन्हें स्वाभाविक रूप से और वास्तव में हमारे आधार को संवेदना से ईसाई विज्ञान में, त्रुटि से सत्य में, पदार्थ से आत्मा में बदलना चाहिए।

पदार्थ की स्थिति का पता लगाने के लिए चिकित्सक नाड़ी, जीभ, फेफड़ों की जांच करते हैं, जबकि वास्तव में सब कुछ मन है।

8. 376 : 17-27

यदि शरीर भौतिक है, तो इसी कारण से वह ज्वर से पीड़ित नहीं हो सकता। क्योंकि तथाकथित भौतिक शरीर एक मानसिक अवधारणा है और नश्वर मन द्वारा शासित है, यह केवल वही प्रकट करता है जो तथाकथित मन व्यक्त करता है। इसलिए कारगर उपाय यह है कि रोगी के झूठे विश्वास को चुपचाप और श्रव्य रूप से सामंजस्यपूर्ण अस्तित्व के संबंध में सच्चे तथ्यों पर बहस करके नष्ट कर दिया जाए, - मनुष्य को रोगग्रस्त के बजाय स्वस्थ के रूप में प्रतिनिधित्व करना, और यह दिखाना कि यह असंभव है कि पदार्थ को पीड़ित होना, दर्द महसूस करना या महसूस करना असंभव है। गर्मी, प्यासा या बीमार होना। भय का नाश करो, और तुम ज्वर को समाप्त करो।

9. 371 : 26-32

विज्ञान और ईसाई धर्म के माध्यम से मानव जाति में सुधार होगा। दौड़ को बढ़ाने के लिए आवश्यकता इस तथ्य के लिए पिता है कि माइंड यह कर सकता है; क्योंकि मन अशुद्धता के बजाय पवित्रता प्रदान कर सकता है, कमजोरी के बजाय ताकत और बीमारी के बजाय स्वास्थ्य। सत्य संपूर्ण व्यवस्था में परिवर्तनकारी है, और इसके "हर तिनका को पूरा" कर सकते हैं।

10. 146 : 2-7

प्राचीन ईसाई चिकित्सक थे। ईसाई धर्म का यह तत्व क्यों खो गया है? क्योंकि हमारे धर्म की प्रणालियाँ चिकित्सा की हमारी प्रणालियों द्वारा कम या ज्यादा संचालित होती हैं। पहले मूर्तिपूजा सामग्री में विश्वास था। स्कूलों ने देवता में विश्वास के बजाय, ड्रग्स के फैशन पर विश्वास किया है।

11. 230 : 1-2, 4-10

यदि बीमारी वास्तविक है, तो यह अमरता से संबंधित है; अगर यह सच है, यह सत्य का एक हिस्सा है।... लेकिन अगर बीमारी और पाप भ्रम हैं, तो इस नश्वर सपने से जागृति, या भ्रम, हमें स्वास्थ्य, पवित्रता और अमरता में लाएगा। यह जागृति हमेशा के लिए मसीह के आने की है, सत्य का उन्नत रूप है, जो त्रुटि को बाहर निकालता है और बीमारों को ठीक करता है। यह वह मोक्ष है जो ईश्वर, ईश्वरीय सिद्धांत और प्रेम के माध्यम से आता है, जैसा कि यीशु द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

12. 483 : 5-12

हम बीमारी को त्रुटि के रूप में वर्गीकृत करते हैं, जिसे सत्य या मन के अलावा और कुछ नहीं ठीक कर सकता है, और यह मन मानवीय होना चाहिए, दिव्य नहीं। मन अन्य सभी शक्ति को पार कर जाता है, और अंततः चिकित्सा में अन्य सभी साधनों को उलट देगा। विज्ञान द्वारा चंगा करने के लिए, आपको विज्ञान की नैतिक और आध्यात्मिक मांगों से अनभिज्ञ नहीं होना चाहिए और न ही उनकी अवज्ञा करनी चाहिए। नैतिक अज्ञानता या पाप आपके प्रदर्शन को प्रभावित करता है, और ईसाई विज्ञान में मानक के लिए अपने दृष्टिकोण में बाधा।

13. 142 : 28-4

ईश्वर सब में है, उसने औषधि बनाई; लेकिन वह दवा थी मन। यह कोई पदार्थ नहीं हो सकता था, जो मन, ईश्वर के स्वभाव और चरित्र से अलग हो। सत्य हर प्रकार की त्रुटि के लिए ईश्वर का उपाय है, और सत्य केवल असत्य को नष्ट कर देता है। इसलिए तथ्य यह है कि आज, कल की तरह, मसीह बुराइयों को दूर करता है और बीमारों को चंगा करता है।

14. 144 : 20-22, 27-29

सत्य, न कि भौतिक इच्छा, वह दिव्य शक्ति है जो रोग को कहती है, "शांति, शांत रहो।"

जब सत्ता के विज्ञान को सार्वभौमिक रूप से समझा जाएगा, तो प्रत्येक व्यक्ति अपना चिकित्सक होगा, और सत्य सार्वभौमिक रामबाण होगा।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6